राजभाषा कार्यान्वयन

Rajbhasha Unit

'सौर ऊर्जा अनुप्रयोगों के लिए पदार्थों और साधनों में वर्तमान प्रगति' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी – 2011 . .. .130

कार्यशाला ... .131

हिन्दी पखवाड़ा.... 131

व्याख्यान 132

'सौर ऊर्जा अनुप्रयोगों के लिए पदार्थों और साधनों में वर्तमान प्रगति' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी – 2011

पुरातन काल से ही मानव सौर ऊर्जा का विविध प्रकार से उपयोग करता आ रहा है। अनन्त काल से सूर्य मानव, पृथ्वी एवं ब्रह्माण्ड के लिए अनवरत ऊर्जा का स्रोत रहा है। हमारी भारत भूमि पर प्रतिवर्ष 250–300 दिन 4.7 kWh/m^2 सौर विकिरण प्राप्त होता है। संकीर्ण होते जीवाश्म (fossil) ईंधन और उससे जनित प्रदूषण के कारण विश्व का वैज्ञानिक समुदाय सौर ऊर्जा के समुचित उपयोग हेतु प्रयासरत है। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के वैज्ञानिक सौर ऊर्जा के अथाह प्रभाव से अवगत रहे हैं और विगत 30 वर्षों से भी अधिक समय से सौर ऊर्जा के विभिन्न प्रकार से उपयोग हेतु शोध कार्य कर रहे हैं। इस क्षेत्र में क्रिस्टलीय सिलिकन, अक्रिस्टलीय तनुपरत सिलिकन, कैडमियम टेल्युराइड सल्फाइड सौर सैल, सौर पैनल तथा सौर उष्मा से बनी युक्तियों (devices) पर शोध कार्य में प्रयोगशाला देश में अग्रणी रही है और इसने अनेक प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की हैं।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में 1–2 सितंबर, 2011 को 'सौर ऊर्जा अनुप्रयोगों के लिए पदार्थों और साधनों में वर्तमान प्रगति' विषय पर राजभाषा हिन्दी में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में सौर ऊर्जा के समुचित उपयोग हेतु देश भर के अन्य संस्थानों में संलग्न वैज्ञानिकों एवं शोध कर्त्ताओं को आपस में विचार विमर्श करने और अपने अनुभवों के आदान–प्रदान के लिए आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में श्री दीपक गुप्ता, सचिव (एम.एन.आर.ई.), भारत सरकार के मुख्य अतिथि थे। प्रो. एस. के. जोशी, पूर्व महानिदेशक, सी.एस.आई.आर. ने समारोह की अध्यक्षता की। उद्घाटन समारोह का मुख्य अभिभाषण प्रो. बी. एम. अरोड़ा, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई ने दिया।

संगोष्ठी का शुभारंभ प्रो. रमेश चन्द्र बुधानी, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के स्वागत भाषण से हुआ। निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि श्री दीपक गुप्ता, प्रो. एस. के. जोशी, प्रो. बी.एम. अरोड़ा एवं सभागार में उपस्थित वैज्ञानिक समुदाय का अभिनन्दन करते हुए एन.पी.एल. में सौर ऊर्जा के क्षेत्रों में हो रहे शोध कार्यों के बारे में बताया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री दीपक गुप्ता ने सौर ऊर्जा के महत्त्व तथा भारत सरकार के प्रयास के अन्तर्गत जवाहर लाल नेहरु सोलर मिशन का उल्लेख किया। प्रो. जोशी, पूर्व महानिदेशक सी.एस.आई.आर., ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में एन.पी.एल. की पूर्व उपलब्धियों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि आगे आने वाले समय में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शोध कार्य किए जाएंगे। प्रो. बी.एम. अरोड़ा ने ''भारत में विद्युत उत्पादन हेतु सौर ऊर्जा : अर्द्धचालक रुट'' पर अपना मुख्य अभिभाषण दिया। आपने अपने अभिभाषण में आर एंड डी. समूहों और शैक्षणिक संस्थानों के समक्ष आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए क्रिस्टलीय और बहुक्रिस्टलीय सिलिकॉन पर आधारित सौर सैल का उल्लेख किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए प्रो. रमेश चन्द्र बुधानी, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला

संगोष्ठी में मुख्यतः पाँच सत्र थे :–

(i) **सोलर थर्मल एंड कंसन्ट्रेटिड फोटो वोल्टिक**

(ii) **क्रिस्टलीय सिलिकॉन सोलर सैल्स,**

(iii) **तनु परत सोलर सैल्स**

(iv) **तनु परत एवं अन्य सोलर सैल्स**

(v) **आर्गेनिक सोलर सैल्स**

संगोष्ठी में 13 आमंत्रित वार्त्ताएं, 2 मौखिक प्रस्तुतिकरण एवं 27 पेपर प्रस्तुत किए गए। हिन्दी में आयोजित यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी भारत की

कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए, श्रीमती भावना गुगलानी

स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा आवश्यकताओं एवं अनवरत ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत प्रासंगिक रही।

कार्यशाला

प्रयोगशाला के सभी वैज्ञानिकों/ तकनीकी अधिकारियों/ अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 14 दिसंबर 2011 को ''छुट्टी यात्रा रियायत (LTC) एवं सामान्य भविष्य निधि (GPF)" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ श्री टी.वी. जोशुवा, प्रशासन नियंत्रक महोदय ने किया। श्रीमती भावना गुगलानी, अनुभाग अधिकारी ने कार्यशाला में उपस्थित स्टाफ सदस्यों को उक्त विषयों पर अद्यतन जानकारी प्रदान की एवं एल.टी.सी. तथा सामान्य भविष्य निधि पर भारत सरकार के नियमों का स्पष्ट उल्लेख करते हुए उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों का भी समाधान किया। इस कार्यशाला में प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रकार यह कार्यशाला अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल रही।

हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा विभाग, गृह मंत्राालय की हिन्दी पखवाड़ा संबन्धी व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए प्रयोगशाला में दिनांक 1.9.2011 से 14.9.2011 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/स्टाफ सदस्यों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसका विवरण निम्न प्रकार से है:

दिनाँक 10.08.2011 को हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता (डेस्क प्रतियोगिता), 16.08.2011 को निबंध प्रतियोगिता, 18. 08.2011 को साइंस क्विज प्रतियोगिता, 26.08.2011 को टंकण प्रतियोगिता, 05. 09.2011 को वर्ष के दौरान हिन्दी में किया गया अधिकतम कार्य एवं हिन्दी डिक्टेशन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 07.09.2011 को प्रयोगशाला के आडिटोरियम में काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री 'बागी चाचा' को आमंत्रित किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में प्रयोगशाला के स्टाफ सदस्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया व अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनाँक 14 सितंबर, 2011 को प्रयोगशाला के ऑडिटोरियम में किया गया। डॉ. ए. सेनगुप्ता कार्यकारी निदेशक महोदय ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रयोगशाला के स्टाफ सदस्यों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए अपना संदेश दिया। इस अवसर पर गैस्ट लैक्चर देने के लिए डा. दुर्गादत्त ओझा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ग्राउण्ड वाटर डिपार्टमेंट, जोधपुर को आमंत्रित किया गया था। डॉ. दुर्गादत्त ओझा ने हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रयोगशाला के सभागार में उपस्थित स्टाफ सदस्यों को दैनिक सरकारी कामकाज में हिन्दी का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हम सभी को हिन्दी में काम करने में झिझक महसूस नहीं होनी चाहिए और अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करना चाहिए। डा. ओझा ने **"विज्ञान और प्रशासन में हिन्दी की उपादेयता"** विषय

हिन्दी दिवस समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए डॉ. ए सेनगुप्ता, कार्यकारी निदेशक, एन.पी.एल.

पर अपने बहुमूल्य विचारों को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। समारोह के अन्त में प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेता प्रतिभागियों को कार्यकारी निदेशक महोदय ने पुरस्कार प्रदान किये।

व्याख्यान

प्रयोगशाला में पिछले कई वर्षों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रशासन के साथ–साथ विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु समय–समय पर विज्ञान विषयों पर विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों के लिए 26 जुलाई, 2011 को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान देने के लिए जामिया–मिल्लिया इस्लामिया

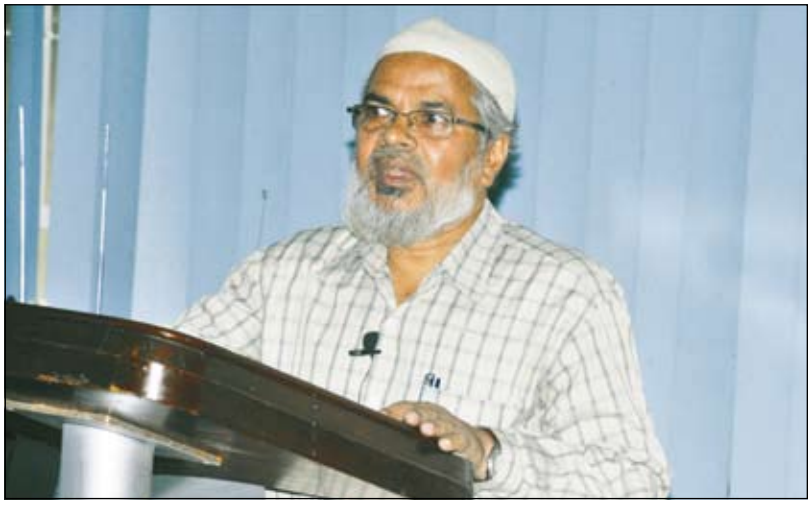

व्याख्यान देते हुए, प्रो. एम.ए. वहाब

यूनिवर्सिटी के भौतिकी विभाग के प्रमुख प्रो. एम. ए. वहाब को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। प्रो. वहाब ने **"दो नए स्पेस लेटिसेस की आवश्यकता"** (Necessity of two new space lattices) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. वहाब ने उपस्थित वैज्ञानिकों को उक्त विषय पर किए जा रहे शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।